हिन्दी विभाग
डॉ० सविता कुमारी सिंह

P.G., II Sem

विषय - उपन्यास और मध्यवर्ग

उपन्यास गद्य-साहित्य का एक विकसित अंग है। दूसरे शब्दों में मानव-जीवन की पूर्ण व्याख्या ही उपन्यास है। उपन्यास का ध्येय केवल मनोरंजन करना था। ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के साथ-साथ उपन्यासों में भी सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक चेतना से एक क्रांति का प्रसार हुआ। प्रेमचन्द ने देश की विभिन्न समस्याओं को चित्रित करने के साथ-साथ ही उन्होंने मन की सूक्ष्मतम भावनाओं, संघर्षों तथा अन्तर्द्वन्द्वों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया। सामाजिक, राजनीतिक तथा साम्प्रदायिक पहलुओं पर जितनी सूक्ष्मता से प्रेमचन्द का विचार है उतना अन्य कोई हिन्दी-लेखक नहीं कर पाया। जीवन के प्रत्येक अंग को नवीन तथा मौलिक रूप से प्रकट करना उनकी प्रतिभा की विशेषता थी। उनके उपन्यासों में शहर, गाँव, नौकर, मालिक, शिक्षित, अशिक्षित, मजदूर, किसान सबका बड़ा

ही सुन्दर चित्रण मिलता है। इन्होंने समस्याओं का चित्रण ही नहीं किया, बल्कि जीवन की गहराइयों में घुसकर उसका सफल निदान ढूँढ निकाला।

उपन्यास के साथ मध्यवर्ग का दोहरा संबंध है। एक ओर वह उपन्यास का रचनाकार होता है और दूसरी ओर उसका पाठक। इसलिए किसी भी भाषा में उपन्यास का उद्भव और विकास मध्यवर्ग के उद्भव और विकास से जुड़ा है। निम्न-वर्ग का व्यक्ति अपने शारीरिक ~~संबंध~~ श्रम से जीविका कमाता है, उसकी सारी शक्ति, उसका सारा समय दो वक्त की रोटी कमाने में ही निकल जाता है। रोज कुआँ खोदना और रोज पानी पीने की प्रक्रिया में उसके पास साहित्य, कला आदि के लिए न तो समय बचता है और न ही वह उनके सृजन, आस्वादन की क्षमता विकसित कर पाता है। यदि निम्नवर्ग का कोई व्यक्ति किसी प्रकार इस योग्य बन जाता है तो उसका वर्ग-चरित्र बदल जाता है। वह निम्नवर्ग से उठकर मध्यवर्ग का व्यक्ति बन जाता है।

...ke rest after your first victory because if you fail in second, more lips are waiting to say that your first victory was just luck. – A.P.J. Abdul Kalam

उच्चवर्ग का व्यक्ति अपनी जीविका न तो शारीरिक श्रम से कमाता है और न मानसिक श्रम से। उसकी जीविका के साधन उसके पारम्परिक अधिकार, उसकी सम्पत्ति या पूँजी होती है। अतः इस वर्ग का व्यक्ति अपनी इन्द्रियों की तृप्ति और अपने अधिकार एवं पूँजी के संरक्षण में इतना संलग्न रहता है कि साहित्य, कला आदि के प्रति न उसकी अभिरुचि होती है और न उसमें इसके लिए क्षमता का विकास हो पाता है। मध्यवर्ग का व्यक्ति अपनी जीविका बौद्धिक श्रम से कमाता है, जिसके कारण स्वाभाविक रूप से वह किसी समाज के साहित्य, कला आदि का संवाहक बन जाता है। उसके पास सृजन-क्षमता होती है। उसके पास इतना अवकाश भी होता है कि वह साहित्य, कला, संगीत आदि का आनन्द ले सके और उसकी अनुशंसा कर सके। यही कारण है कि हमारे देश में विभिन्न भाषाओं का साहित्य अनिवार्यतः मध्यवर्ग के साथ जुड़ा है। हिन्दी साहित्य इसका अपवाद नहीं है।

आधुनिक काल के पूर्व भी मध्यवर्ग था, पर आधुनिक काल से पूर्व संख्या और शक्ति की दृष्टि से वह अत्यन्त क्षीण था। अंग्रेजों ने जो नई प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की, नए ढंग से शिक्षा का प्रसार और प्रचार किया, नई तरह की अर्थव्यवस्था शुरू की, उस सबसे मध्य-वर्ग का विस्तार हुआ, उसका वर्चस्व बढ़ा और वह अपने महत्व, अधिकार के प्रति सचेत हुआ। इस तरह से भारतीय समाज का नेतृत्व उसके हाथ में आया। जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह साहित्य के क्षेत्र में भी नवीनता और आधुनिकता का समावेश उसी के कारण हुआ। साहित्य में नई-नई विधाओं का प्रारम्भ उसी के कारण हुआ। उपन्यास भी एक नई साहित्यिक विधा के रूप में सामने

02 Sunday आया। हिन्दी से पहले उपन्यास का उद्भव बंगला और मराठी में हुआ। वहीं मध्यवर्ग का वर्चस्व भी सबसे पहले स्थापित हुआ और उपन्यास भी वहीं सबसे पहले जन्मा और पनपा।

World Wetlands Day

Success is not final, failure is not fatal: it is the courage to continue that counts. – Winston S. Churchill